MAKTABA TUL MADINAH

Bukhaar Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 230
Weekly Booklet : 230

बुख़ार के फ़ज़ाइल

सफ़्हात 25

सब से पहले बुख़ार किस को हुवा ? 02
ह़दीसे पाक पढ़ाने से शिफ़ा मिलना 06
मुबारक अमराज़ 07
एक दिन बुख़ार छुपाने की फ़ज़ीलत 16

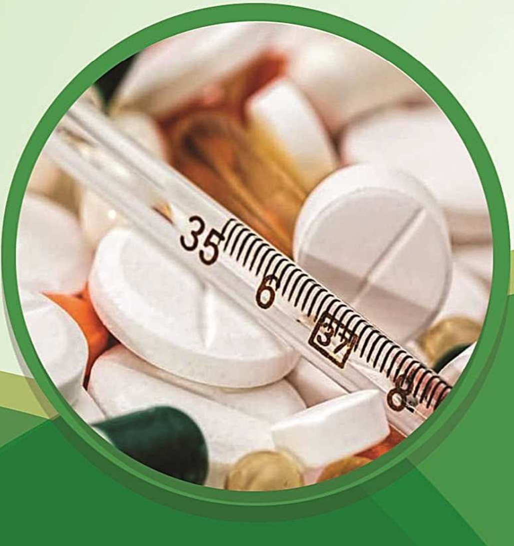

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तृरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तृालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **बुख़ार के फ़ज़ाइल**

सिने तृबाअ़त : जुमादल ऊला **1443** हि., दिसम्बर **2021** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**बुख़ार के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती़ पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बुख़ार के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़ह़ात का रिसाला : "बुख़ार के फ़ज़ाइल" पढ़ या सुन ले उसे बिमारी में शिक्वा व शिकायत करने से बचा कर अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

आफ़्ताबे शरीअ़तो त़रीक़त, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बहुत बड़े आ़लिमे उ़लूमे इस्लाम, आ़शिक़े शाहे अनाम, जां निसारे सह़ाबए किराम, मुह़िब्बे औलियाए किराम और आ़शिक़े दुरूदो सलाम थे । जब भी इ़ल्मी व तदरीसी अवक़ात से फ़ुरसत पाते ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाते । आप के जिस्म शरीफ़ पर फोड़ा हो गया था जिस का ऑपरेशन ज़रूरी था । डॉक्टर ने बेहोशी का इन्जेक्शन लगाना चाहा तो मन्अ़ फ़रमा दिया, आप दुरूदो सलाम के विर्द में मश्ग़ूल हो गए, आ़लमे होशो ह़वास में दो तीन घन्टे तक ऑपरेशन होता रहा, दुरूद शरीफ़ की बरकत से आप ने किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का इज़्हार न होने दिया ।

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 485 मुलख़्ख़सन)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी ना'तिया किताब "बयाज़े पाक" में लिखते हैं :

शकीबे दिल क़रारे जां मुहम्मद मुस्तफ़ा तुम हो तबीबे दर्दे दिल तुम हो मेरे दिल की दवा तुम हो
ग़रीबों दर्दमन्दों की दवा तुम हो दुआ तुम हो फ़क़ीरों बे नवाओं की सदा तुम हो निदा तुम हो
अना मिन हामिदो हामिद रज़ा मिन्नी के जल्वों से بِحَمْدِ اللّٰه रज़ा हामिद हैं और हामिद रज़ा तुम हो

(बयाज़े पाक, स. 13, 15)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बुख़ार किसे कहते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ब मुताबिक़ जुमादल उख़रा 1438 हि. सफ़हा 20 पर है : बुख़ार हमारे जिस्म में किसी इन्फ़ेक्शन की वज्ह से होता है। जिस की वज्ह से जिस्म का मुदाफ़अ़ती निज़ाम (Immune System) मुतहर्रिक हो जाता है और जिस्म में मौजूद वाइट सेल उस के ख़िलाफ़ काम करना शुरूअ़ कर देते हैं जिस के नतीजे में जिस्म का दरजए ह़रारत (Temperature) बढ़ जाता है इसी को बुख़ार कहते हैं। अगर टेम्प्रेचर 102 से ऊपर चला जाए तो तेज़ बुख़ार होता है। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुमादल उख़रा 1438 हि.)

सब से पहले बुख़ार किस को हुवा ?

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ह़ज़रते नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब किश्ती में हर शै के दो जोड़े सुवार किये तो आप عَلَيْهِ السَّلَام के अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ की : हम कैसे इत़्मीनान से रहें क्यूं कि हमारे साथ शेर भी सुवार है, लिहाज़ा **अल्लाह** पाक ने शेर पर बुख़ार मुसल्लत़ फ़रमा दिया तो उस वक़्त ज़मीन पर पहली बार बुख़ार उतरा। फिर लोगों ने चूहे के बारे में अ़र्ज़ किया कि येह हमारे खाने और सामान को ख़राब कर देता है, तो **अल्लाह** पाक ने शेर के दिल में ख़याल पैदा फ़रमाया तो उसे छींक आई और उस से बिल्ली निकली जिस से चूहा डर कर बैठ गया। (تفسیر درِّ منثور، 4/428)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की त़रफ़ से आने वाली आज़्माइश पर रिज़ाए इलाही के लिये सब्र करना चाहिये क्यूं कि बारहा जिस्मानी बीमारियां रह़मते ख़ुदावन्दी का सबब हुवा करती हैं और कभी इन की वज्ह से गुनाहगारों के गुनाह भी मिटाए जाते हैं, ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : क़ुरआने करीम में पारह 16, सूरए मरयम, आयत नम्बर 71 में इर्शाद होता है : ﴿ وَ اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۟ ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो, तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।" इस आयत की तफ़्सीर में अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मोमिन का दोज़ख़ में वुरूद (या'नी दाख़िल होने से मुराद) उस का बुख़ार में मुब्तला होना है। (كشف الغمة فی فضل الحمی، ص8)

बुख़ार होने की एक वज्ह

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुख़ार वाले एक मरीज़ की इयादत फ़रमाई, मैं भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें मुबारक हो क्यूं कि **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : बुख़ार मेरी आग है, मैं दुन्या में अपने मोमिन बन्दे को इस में मुब्तला करता हूं ताकि क़ियामत के दिन जहन्नम की आग का बदला हो जाए। (ابن ماجہ، 4/105، حدیث:3470)

गुनाहों की बीमारी

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के मरज़ (या'नी बीमारी) में किसी ने अ़र्ज़ की : आप को कौन सा मरज़ है ? (तो आप ने बत़ौरे आ़जिज़ी) इर्शाद फ़रमाया : गुनाहों का। अ़र्ज़ की गई : आप क्या

चाहते हैं ? फ़रमाया : अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत। लोगों ने अ़र्ज़ की : क्या हम आप के लिये किसी त़बीब (Doctor) को बुलाएं ? इर्शाद फ़रमाया : त़बीब (या'नी **अल्लाह** पाक) ने ही मुझे बीमार किया है। (قوت القلوب، 2/36)

गुनाह से बढ़ कर कौन सी बीमारी है ?

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसार सद करोड़ मरह़बा ! इस रिवायत में हमारे लिये बड़ा दर्स है क्यूं कि अस्ल हलाको बरबाद करने वाली बीमारी "गुनाहों की बीमारी" है, एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने किसी शख़्स से पूछा : "मुझ से जुदा हो कर कैसे रहे ?" उस ने कहा : "सह़ीह़ सलामत रहा।" बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी न की तो सलामती के साथ रहे और अगर ना फ़रमानी कर चुके हो तो गुनाह से बढ़ कर कौन सी बीमारी है कि जो **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करे उस के लिये कोई सलामती नहीं।" (احیاء العلوم، 4/358)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर — येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं — भाई क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432)

बुख़ार में फ़ौत होने वाला शहीद है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस्मानी बीमारी तो बारहा गुनाहों की मुआ़फ़ी और बुलन्दिये दरजात का सबब बनती है, अफ़्सोस ! हम जिस्मानी अमराज़ से बचने की कई तदबीरें करते हैं, काश ! गुनाहों के अमराज़ से बचने की भी कोशिश करें, कोरोना वायरस, डेंग्यू वायरस, मलेरिया, टीबी, केन्सर, फ़ालिज जैसी मोहलिक बीमारियों से डरते हैं ह़ालां कि इस से कई गुना ज़ियादा ख़त़रनाक बीमारी गुनाहों की बीमारी है। गुनाह करना तो दूर की बात, गुनाह के बारे में सोचने से भी

डरना चाहिये कि जिस्मानी बीमारी ज़ियादा से ज़ियादा जान लेगी जब कि गुनाहों की बीमारी ईमान ज़ाएअ़ कर सकती है, **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये जिस्मानी बीमारी में सब्र कर के अज्रो सवाब बल्कि शहादत का रुत्बा भी ह़ासिल किया जा सकता है, जैसा कि ह़दीसे पाक में बुख़ार के बारे में फ़रमाया गया है कि बुख़ार में फ़ौत होने वाला शहीद है। (کنز العمال،2/178)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुख़ार एक आ़म बीमारी है शायद ही येह किसी को न हुवा हो। बुख़ार के बारे में चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये और बुख़ार में गिला, शिक्वा करने की बजाए **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए सब्र कर के अ़ज़ीमुश्शान अज्रो सवाब के ह़क़दार बनिये !

जन्नत के 8 दरवाज़ों की निस्बत से 8 फ़रामीने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जब कोई बन्दा या बन्दी मुसल्सल बुख़ार और सर दर्द में मुब्तला हो और उस पर उहुद पहाड़ की मिस्ल गुनाह हों तो जब वोह बीमारी उस से जुदा होती है तो उन के सर पर राई के दाने बराबर भी गुनाह नहीं होते। (الترغیب والترہیب،4/151،رقم:67)

﴾2﴿ जो एक रात बुख़ार में मुब्तला हुवा और उस पर सब्र करे और **अल्लाह** पाक से राज़ी रहे तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था। (شعب الایمان،7/167،حدیث:9868)

﴾3﴿ बुख़ार जहन्नम के जोश से है और येह मोमिन का जहन्नम से ह़िस्सा है। (الترغیب والترہیب،4/153،حدیث:83)

﴾4﴿ बुख़ार जहन्नम की भट्टी है लिहाज़ा इस में से जितनी मिक़्दार मोमिन को पहुंची वोह उस का जहन्नम से ह़िस्सा होता है। (مسند امام احمد،8/275،حدیث:22227)

﴾5﴿ **अल्लाह** पाक एक रात के बुख़ार के सबब मोमिन के तमाम पिछले गुनाह मिटा देता है। (الترغیب والترہیب،4/153،حدیث:78)

﴾6﴿ जब तक बुख़ार में मुब्तला शख़्स के क़दम में दर्द रहता है और उस की रग फड़क्ती रहती है उसे इस के बदले में नेकियां मिलती रहती हैं।

(जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, स. 616)

﴾7﴿ बन्दए मोमिन को जब लू लगती है या बुख़ार होता है तो उस की मिसाल उस लोहे की त़रह़ होती है जिसे आग में डाला गया तो आग ने उस का ज़ंग दूर कर दिया और अच्छाई बाक़ी रखी। (مستدرک،4/536،حدیث:5880)

﴾8﴿ बुख़ार को बुरा न कहो इस लिये कि येह तो गुनाहों से इस त़रह़ पाक कर देता है जैसे आग लोहे के मैल को दूर कर देती है। (ابن ماجہ،4/104،حدیث:3469)

ह़दीसे पाक पढ़ाने से शिफ़ा मिल जाती

हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने एक मरतबा इर्शाद फ़रमाया : जब लोग बीमार होते हैं, बुख़ार या सर दर्द होता है तो वोह दवा खाते हैं, लेकिन मुझे तक्लीफ़ होती है तो मैं ह़दीसे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ाता हूं जिस से मुझे आराम आ जाता है। (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 153)

जिस को मरज़े इश्क़ नहीं है वोह है बीमार — अच्छा तो वोही है जो है बीमार तुम्हारा
हर वक़्त तरक़्क़ी पे रहे दर्दे मह़ब्बत — चंगा न हो मौला कभी बीमार तुम्हारा

(क़बालए बख़्शिश, स. 47)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क्या कभी बीमार न होना अच्छी बात है ?

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबुल यक़्ज़ान अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के इर्द गिर्द कुछ लोग ह़ल्क़ा बनाए बैठे थे कि बीमारी का

तज़्किरा हुवा तो एक दीहाती ने फ़ख़्रिया अन्दाज़ में कहा : मैं तो कभी बीमार नहीं हुवा ! येह सुनते ही आप ने फ़रमाया : तू हम में से नहीं है क्यूं कि कामिल ईमान वाले को मुसीबतों के ज़रीए आज़्माया जाता है और उस के गुनाह इस त़रह़ गिरते हैं जिस त़रह़ दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं । (شعب الایمان،7/178،حدیث:9913)

मुबारक अमराज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इर्शाद फ़रमाते हैं : दर्दे सर और बुख़ार वोह मुबारक अमराज़ हैं जो अम्बियाए (किराम) عَلَیۡہِمُ السَّلَام को होते थे । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 118)

40 दिन में बीमारी न आए तो ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जिस्म के ह़क़ में कभी कभी हलका बुख़ार, ज़ुकाम, दर्दे सर और इन के मिस्ल हलके अमराज़ बला नहीं ने'मत हैं बल्कि इन का न होना बला है मर्दाने ख़ुदा पर अगर चालीस दिन गुज़रें कि कोई इ़ल्लतो क़िल्लत न पहुंचे (या'नी बीमारी व परेशानी न आए) तो इस्तिग़्फ़ार व इनाबत फ़रमाते हैं (या'नी तौबा करते और रुजूअ़ लाते) कि मबादा बाग ढीली न कर दी गई हो (या'नी जिस त़रह़ ना फ़रमानों को गुनाहों की वज्ह से ढील दे दी जाती है, कहीं ऐसा ही मुआ़मला हमारे साथ न हो) (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 173)

कोई ख़ैर व भलाई नहीं

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم का त़रीक़ए कार येह होता कि अगर किसी साल जान या माल पर कोई

मुसीबत न आती तो घबरा जाते और कहते : "मोमिन को हर 40 दिन में कोई न कोई घबरा देने वाला मुआ़मला या आज़्माइश ज़रूर पहुंचती है।" ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ कहते हैं : जो शख़्स चालीस रातों में एक रात में भी गिरिफ़्तारे रन्जो अलम न हुवा हो, **अल्लाह** पाक के यहां उस के लिये कोई ख़ैर व भलाई नहीं है। (مکاشفۃ القلوب، ص15)

वोह कि आफ़ात में मुब्तला हैं जो गिरिफ़्तारे रन्जो बला हैं
फ़ज़्ल से उन को सब्रो रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रग रग के गुनाह

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर एक मरज़ या तक्लीफ़ जिस्म के जिस मौज़ेअ़ (या'नी जगह) पर होती है वोह ज़ियादा कफ़्फ़ारा उसी मौक़अ़ का है कि जिस का तअ़ल्लुक़ ख़ास उस से है लेकिन बुख़ार वोह मरज़ है कि तमाम जिस्म में सरायत कर जाता है जिस से बि इज़्निही तआ़ला (या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से) तमाम रग रग के गुनाह निकाल लेता है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ कि मुझे अक्सर ह़रारत व दर्दे सर रहता है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 119)

अल्लाह वालों की शान

इमाम अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक आ़रिफ़ (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्ग) फ़रमाते हैं कि मेरा दिल सब से ज़ियादा साफ़ उस वक़्त होता है जब मुझे बुख़ार होता है।

(قوت القلوب، 37/2)

ऐसे ही अहलुल्लाह का मकूला نَحنُ نَفرَحُ بِالْبَلَاءِ کَمَا یَفرَحُ اَھلُ الدُّنْیَا بِالنِّعَمِ या'नी हम बलाओं और मुसीबतों के मिलने पर ऐसे ही ख़ुश होते हैं जैसे अहले दुन्या दुन्यवी ने'मतें हाथ आने पर ख़ुश होते हैं। याद रहे ! मुसीबत बसा अवक़ात मोमिन के ह़क़ में रह़मत हुवा करती है और सब्र कर के अ़ज़ीम अज्र कमाने और बे ह़िसाब जन्नत में जाने का मौक़अ़ फ़राहम करती है।

चुप कर सीं तां मोती मिल्सन, सब्र करे तां हीरे

पागलां वांगों रोला पावें नां मोती नां हीरे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ुश ख़बरी सुन लो !

ह़ज़रते बीबी उम्मे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं सख़्त बुख़ार की वज्ह से कपकपा रही थी कि मेरे पास हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ऐ उम्मे मालिक ! तुझे क्या हुवा ? मैं ने अ़र्ज़ किया : उम्मे मिल्दम, (येह बुख़ार की कुन्यत है) **अल्लाह** पाक ने जो किया सो किया, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ उम्मे मालिक ! बुख़ार को बुरा न कहो, क्यूं कि **अल्लाह** पाक इस के सबब से बन्दे के गुनाहों को ऐसे गिराता है जैसे दरख़्त से पत्ते गिरते हैं। (کشف الغمہ فی فضل الحمی، ص8)

बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बुख़ार की ह़ाज़िरी

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ एक बार बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए तो रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बुख़ार शरीफ़ आया हुवा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपना हाथ रखा तो एक दम सख़्त गर्म होने की वज्ह से उठा लिया और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप को तो बहुत शदीद बुख़ार है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने आज के दिन या कल रात में सत्तर (70) ऐसी सूरतों की तिलावत की है जिस में सब्ए़ तिवाल[1] थीं । आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेशक **अल्लाह** पाक ने आप के सदक़े आप के अगलों पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये हैं लिहाज़ा आप अपने ऊपर नरमी फ़रमाइये । रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं अपने रब का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?

(كشف الغمة فی فضل الحمی للسیوطی، ص16)

एक रिवायत में है : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप को बुख़ार था मैं ने अपने हाथ से जिस्मे अत़्हर छुवा तो अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हुज़ूर को बुख़ार बहुत ही सख़्त आता है तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां ! मुझे तुम्हारे दो शख़्सों के बराबर बुख़ार हुवा करता है । मैं ने अ़र्ज़ किया : येह इस लिये होगा कि हुज़ूर को सवाब भी दुगना है ? फ़रमाया : हां । फिर फ़रमाया : कोई मुसल्मान ऐसा नहीं जिसे कोई तक्लीफ़ बीमारी वग़ैरा पहुंचे मगर **अल्लाह** पाक उस के गुनाह यूं झाड़ देता है जैसे दरख़्त अपने पत्तों को ।

(بخاری،4/9، حدیث:5660)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि ग़ुलाम आक़ा की मिज़ाज पुर्सी भी

1... सूरतुल बक़रह, आले इमरान, अन्निसाअ, अल माइदह, अल अन्आ़म, अल आ'राफ़, अल अन्फ़ाल, अत्तौबह, येह आठ सूरतें सब्ए़ तिवाल कहलाती हैं अल अन्फ़ाल और अत्तौबह के दरमियान बिस्मिल्लाह न होने की वज्ह से इसे एक शुमार किया गया है । इल्मिय्या

करे और उस के जिस्म को हाथ भी लगाए। ह़दीस शरीफ़ के इस हिस्से "येह इस लिये होगा कि हुज़ूर को सवाब भी दुगना है ?" के तह़्त फ़रमाते हैं : येह है सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم का अदबो एह़तिराम या'नी **या रसूलल्लाह !** येह तो वहम भी नहीं किया जा सकता कि आप की बीमारी ख़त़ाओं की मुआ़फ़ी के लिये हो आप को गुनाह व ख़त़ा से निस्बत ही क्या, आप की बीमारी सिर्फ़ बुलन्दिये दरजात के लिये हो सकती है, इस से मा'लूम हुवा कि जिन चीज़ों से हम गुनहगारों के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं उन से नेककारों (या'नी **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों) के दरजे बढ़ते हैं। (ह़दीस में) मुसल्मान से मुराद गुनहगार मुसल्मान है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/410, 411)

इन्तिक़ाल शरीफ़ से पहले बुख़ार की ह़ाज़िरी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुद्दते मरज़ (इन्तिक़ाल शरीफ़ से क़ब्ल) बारह दिन थी और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बुख़ार शरीफ़ दर्दे सर के सबब था। सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सूरए नस्र ﴿اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴾ नाज़िल हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर दी गई है। (سنن الدارمی، المقدمۃ، باب فی وفاۃ النبی صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم، 1/51، حدیث:79) फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास इस ह़ाल में तशरीफ़ लाए कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुख़ार था। (मरज़े मुबारक के दिनों में) जां निसार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब अपने दिलों के चैन, रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बिग़ैर नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे कि यादे मह़बूब

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शदीद रोना शुरूअ़ कर दिया, जिसे सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की : **या अल्लाह !** बुख़ार पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते को हुक्म दे कि तेरे नबी पर कम हो जाए ताकि मैं बाहर जा कर लोगों को नमाज़ पढ़ा लूं और दुन्या छोड़ने से पहले अपने सह़ाबा को "अल वदाअ़" कह लूं। (दुआ़ का असर फ़ौरन ज़ाहिर हुवा और) आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने (मुबारक) जिस्म में बुख़ार की कमी पाई और वुज़ू फ़रमा कर ह़ज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास, ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद और ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم का सहारा लिये घर से बाहर तशरीफ़ लाए। (الروض الفائق، ص261)

मरज़े मुबारक की कैफ़िय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल शरीफ़ के मरज़े मुबारक की शुरूआ़त सरे मुबारक के दर्द शरीफ़ से हुई और ज़ाहिर येह है कि सर दर्द बुख़ार के साथ था क्यूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मरज़ में बुख़ार शदीद हो गया था, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तृश्त (या'नी एक बड़े बरतन) में तशरीफ़ फ़रमा होते और आप पर सात मश्कों का पानी डाला जाता, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पानी से ठन्डक ह़ासिल करते, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कम्बल शरीफ़ ओढ़े हुए थे, जो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हाथ रखता उसे कम्बल शरीफ़ के ऊपर से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बुख़ार शरीफ़ की ह़रारत (या'नी गरमी) मह़सूस होती थी, इस के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : हम पर यूंही तक्लीफ़ सख़्त होती है और हमारे लिये अज्र बढ़ा दिया जाता है। और फ़रमाया : मुझे ऐसा बुख़ार आता है जैसा तुम्हारे दो मर्दों को आता है।

(ابن ماجہ، 4/370، حدیث:4024، بخاری، 3/155، حدیث:4442، بخاری، 4/5، حدیث:5648 ماخوذا)

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा सख़्त मरज़ में किसी को न देखा। (या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर बीमारी, दर्द, बुख़ार शरीफ़ वग़ैरा दूसरों की बीमारियों से ज़ियादा सख़्त होती थी।) (मिरआतुल मनाजीह़, 2/411)

7 मश्कों की ह़िक्मत

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल रज़वी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم त़श्त (या'नी एक बड़े बरतन) में तशरीफ़ फ़रमा होते और आप पर सात मश्कों का पानी डाला जाता" की शर्ह़ में लिखते हैं : सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जिस बरतन में बिठाया गया वोह ग़ालिबन लकड़ी था और आप ने वोह (या'नी पानी) इस लिये त़लब फ़रमाया था कि मरीज़ पर जब ठन्डा पानी बहाया जाए तो बा'ज़ अमराज़ में उस की त़ाक़त बह़ाल हो जाती है, आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मश्कीज़ों में येह शर्त़ रखी कि उन के मुंह न खुले हों क्यूं कि हाथों के पानी से टच (या'नी मस) न होने की वज्ह से पानी साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ होता है और सात मश्कीज़े इस लिये फ़रमाए कि सात के अ़दद में बरकत है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी, 1/461 ब तग़य्युर)

सात का अ़दद

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : **सात** का अ़दद अफ़्ज़ल आ'दाद में से है। (फ़तावा रज़विय्या, 6/232) और सात के अ़दद को दफ़्ए़ ज़ररो आफ़त (या'नी नुक़्सान व मुसीबत को दूर करने) में एक तासीरे ख़ास है। (फ़तावा रज़विय्या, 24/183) एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : सात के अ़दद में ह़िक्मत और राज़ येह है कि इस को ज़हर और

जादू के ज़रर (या'नी नुक़्सान) को दूर करने में ख़ास तासीर है। ह़दीसे पाक से साबित है कि जो कोई सुब्ह़ सवेरे सात अ़ज्वा खजूरें खा ले तो उसे उस दिन ज़हर और जादू से नुक़्सान नहीं पहुंचेगा।

(بخاری، 3/540، حدیث:5445, फ़तावा रज़विय्या, 24/183 मुल्तक़तन)

सात पर्दों में नज़र और नज़र में आ़लम कुछ समझ में नहीं आता येह मुअ़म्मा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 20)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़नाफ़िर्रसूल, आ़शिक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ عَنْہ की मरज़ शरीफ़ में मुशाबहत

मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ की वफ़ात (शरीफ़) का अस्ली सबब हुज़ूरे अन्वर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात (शरीफ़) है जिस का सदमा दमे आख़िर तक आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ के क़ल्बे मुबारक से कम न हुवा और उस रोज़ से बराबर आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ का जिस्म शरीफ़ घुलता और दुबला होता गया। 7 जुमादल उख़्रा 13 हि. पीर शरीफ़ को आप ने गुस्ल फ़रमाया, दिन सर्द था, बुख़ार आ गया। सह़ाबा इ़यादत के लिये आए। अ़र्ज़ करने लगे : ऐ ख़लीफ़ए रसूल (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم و رَضِیَ اللہُ عَنْہ) ! इजाज़त हो तो हम त़बीब को बुलाएं जो आप को देखे। फ़रमाया कि त़बीब ने तो मुझे देख लिया। उन्हों ने पूछा कि फिर त़बीब ने क्या कहा ? फ़रमाया कि उस ने फ़रमाया : اِنِّیْ فَعَّالٌ لِّمَا اُرِیْدُ या'नी मैं जो चाहता हूं करता हूं। मुराद येह थी कि ह़कीम **अल्लाह** पाक है उस की मरज़ी को कोई टाल नहीं सकता, जो मशिय्यत है ज़रूर होगा। पन्दरह रोज़ की

अ़लालत (शरीफ़) के बा'द 22 जुमादल उख़्रा 13 हि. शबे सेह शम्बा (मंगल की रात) को 63 साल की उ़म्र में इस दारे ना पाएदार से रिह़लत फ़रमाई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ । (सवानेहे करबला, स. 49)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

भटक सकते नहीं हम अपनी मन्ज़िल ठोकरों में है

नबी का है करम और रहनुमा सिद्दीक़े अक्बर हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 567)

ता'वीज़ की बरकत (वाक़िआ़)

मन्क़ूल है : एक शख़्स को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते शैख़ उ़मर बिन सईद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक ता'वीज़ इनायत कर के फ़रमाया : इस को खोल कर मत देखना। उन के जाने के बा'द उस ने ता'वीज़ बांध लिया, फ़ौरन बुख़ार जाता रहा। उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" लिखा था। दिल में वस्वसा आया, येह तो कोई भी लिख सकता है! अ़क़ीदत में कमी आते ही फ़ौरन बुख़ार वापस आ गया। घबरा कर शैख़ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ग़लती की मुआ़फ़ी चाही। उन्हों ने ता'वीज़ बना कर अपने मुबारक हाथ से बांध दिया, बुख़ार फ़ौरन चला गया। अब की बार खोल कर देखने से मन्अ़ नहीं फ़रमाया था मगर डर के मारे खोल कर न देखा। बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर देखा तो वोही "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" लिखी थी।

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' की बड़ी बरकतें हैं और इस में बीमारियों का इलाज भी है। इस वाक़िए से दर्स मिला कि बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم अगर किसी मुबाह़ बात से भी मन्अ़ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बाज़ रहना चाहिये और येह भी दर्स मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिक़ाद मुतज़ल्ज़िल होने (या'नी बदलने) का अन्देशा रहता है। फिर इस की तह करने के मख़्सूस त़रीक़े के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज़ अवक़ात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है। लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सकती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

एक दिन बुख़ार छुपाने की फ़ज़ीलत

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस को बुख़ार हुवा उस ने एक दिन अपने बुख़ार को छुपाया तो **अल्लाह** पाक उस को गुनाहों से इस त़रह़ निकाल देगा जैसे मां के पेट से निकाला था और उस के लिये जहन्नम की आग से आज़ादी लिख देगा और उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा जैसे दुन्या में उस ने **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मिलने वाली बला (या'नी बीमारी) को छुपाया था। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا،4/293)

वोह कि आफ़ात में मुब्तला हैं जो गिरिफ़्तारे रन्जो बला हैं
फ़ज़्ल से उन को सब्रो रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मौत के तीन क़ासिद

अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیۡہِ السَّلَام और

हज़रते इज़राईल मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام में दोस्ती थी। एक बार जब हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आए तो हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : आप मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए हैं या मेरी रूह क़ब्ज़ करने के लिये ? अ़र्ज़ किया : मुलाक़ात के लिये। फ़रमाया : मुझे वफ़ात देने से क़ब्ल मेरे पास अपने क़ासिद भेज देना। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : मैं आप की त़रफ़ दो या तीन क़ासिद भेज दूंगा। चुनान्चे जब रूह क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आए तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : आप ने मेरी वफ़ात से क़ब्ल क़ासिद भेजने थे वोह क्या हुए ? हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : काले बालों के बा'द सफ़ेद बाल, जिस्मानी त़ाक़त के बा'द कमज़ोरी और सीधी कमर के बा'द कमर का झुकाव, ऐ या'कूब (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मौत से पहले इन्सान की त़रफ़ मेरे क़ासिद ही तो हैं। (مکاشفۃ القلوب، ص21)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि मौत आने से पहले मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अपने क़ासिद भेजते हैं। बयान किये गए तीन क़ासिदीन के इ़लावा भी अह़ादीसे मुबारका में मज़ीद क़ासिदीन का तज़्किरा मिलता है। चुनान्चे मरज़, कानों और आंखों का तग़य्युर (या'नी पहले नज़र अच्छी होना फिर कमज़ोर पड़ जाना और सुनने की त़ाक़त की दुरुस्ती के बा'द बहरा पन की आमद) भी मौत के क़ासिद हैं। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुख़ार मौत का क़ासिद है और येह ज़मीन में **अल्लाह** पाक की जेल है जिस में **अल्लाह** पाक अपने बन्दे को जब तक चाहता है क़ैद करता है फिर उस को छोड़ देता है। (موسوعہ ابن ابی الدنیا، 4/244ملتقطاً)

हम में से बहुत से लोग ऐसे होंगे जिन के पास मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام

के क़ासिद तशरीफ़ ला चुके होंगे मगर क्या कहिये इस ग़फ़्लत का ! अगर सियाह बालों के बा'द सफ़ेद बाल होने लगते हैं ह़ालां कि येह मौत का क़ासिद है मगर बन्दा अपने दिल को ढारस देने के लिये कहता है कि येह तो नज़्ले से बाल सफ़ेद हो गए हैं ! इसी त़रह़ बीमारी जो कि मौत का नुमायां क़ासिद है मगर इस में भी सरासर ग़फ़्लत बरती जाती है ह़ालां कि "बीमारी" ही के सबब रोज़ाना बे शुमार अफ़राद मौत का शिकार होते हैं ! मरीज़ को तो बहुत ज़ियादा मौत याद आनी चाहिये कि क्या मा'लूम जो बीमारी मा'मूली लग रही है वोही मोहलिक सूरत इख़्तियार कर के आन की आन में फ़ना के घाट उतार दे फिर अपने रोएं धोएं, दुश्मन ख़ुशियां मनाएं और मरने वाला मौत से ग़ाफ़िल मरीज़ मनों मिट्टी तले अंधेरी क़ब्र में जा पड़े ! आह ! अब मरने वाला होगा और उस के अच्छे बुरे आ'माल । **अल्लाह** पाक सूरतुत्तौबह आयत नम्बर 126 में इर्शाद फ़रमाता है :

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ (پ11، التوبۃ:126)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन्हें नहीं सूझता कि हर साल एक या दो बार आज़्माए जाते हैं फिर न तो तौबा करते हैं न नसीह़त मानते हैं ।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत की तफ़्सीर में कहा गया है कि आज़्माने से मुराद बीमारियों में मुब्तला करना है । (एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं :) बुख़ार मौत की याद दिलाता और अ़मल करने में सुस्ती को भगाता है ।

(احیاء العلوم، 4/358)

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! अब तो कई हस्पतालों के वॉर्डज़ में मरीज़ों को सुकून देने की ग़रज़ से त़रह़ त़रह़ के गुनाहों भरे चेनल्ज़ और मूसीक़ी से भरपूर मनाज़िर दिखाए जाते हैं ताकि इस त़रह़ मरीज़ का ख़याल बटा रहे और सुकून मिले, इसी त़रह़ के बा'ज़ लोगों का ना'रा है मूसीक़ी रूह़ की ग़िज़ा है, नहीं नहीं ! येह किसी ग़ैर मुस्लिम और बुरी त़बीअ़त वाली रूह़ की तो ग़िज़ा हो सकती है मगर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मानने वाले मोमिने कामिल की रूह़ की ग़िज़ा कभी नहीं हो सकती, अगर आप को रूह़ की ग़िज़ा चाहिये तो आइये मैं बताता हूं रूह़ की ग़िज़ा कौन सी है और येह कैसे मिलेगी, **अल्लाह** पाक पारह 13, सूरए रा'द, आयत नम्बर 28 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ۝۲۸﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

अब एक मुसल्मान के लिये सोचने की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रह जाती, क्यूं कि हर मुसल्मान का क़ुरआने करीम के एक एक ह़र्फ़ पर ईमान है। और जो क़ुरआने करीम ने फ़रमा दिया वोह ह़क़, ह़क़ और बिल्कुल ह़क़ है। गाने बाजे सुनना सुनाना शैत़ानी काम हैं, सआ़दत मन्द मुसल्मान इन चीज़ों के क़रीब भी नहीं जाते।

"आ़फ़ियत से नवाज़" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 11 रूह़ानी इलाज

﴾1﴿ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "सूरए मुजादलह" जो अठ्ठाईसवें पारे की पहली सूरत है, बा'दे अ़स्र तीन मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के (बुख़ार वाले को) पिलाइये। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 325)

﴾2﴿ बुख़ार वाला ब कसरत "بِسۡمِ اللّٰہِ الۡکَبِیۡرِ" पढ़ता रहे। (बीमार आ़बिद, स. 25)

﴾3﴿ गरमी का बुख़ार हो तो "یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ" 47 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले में डाल दीजिये اِنۡ شَآءَاللہ बुख़ार जाता रहेगा। (बीमार आ़बिद, स. 25)

﴾4﴿ "یَاغَفُوۡرُ" काग़ज़ पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले में डाल या बाज़ू पर बांध दीजिये, اِنۡ شَآءَاللہ हर क़िस्म के बुख़ार से नजात मिलेगी।

(बीमार आ़बिद, स. 25)

﴾5﴿ "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ" 30 बार काग़ज़ पर लिख कर पानी की बोतल में डाल कर मरीज़ को दिन में तीन बार थोड़ा थोड़ा पानी पिलाइये اِنۡ شَآءَاللہ बुख़ार उतर जाएगा, ज़रूरतन मज़ीद पानी शामिल करते रहिये। (मुद्दते इलाज ता हुसूले शिफ़ा) (बीमार आ़बिद, स. 25)

﴾6﴿ (پ29، الدھر:13) ﴾لَا یَرَوۡنَ فِیۡہَا شَمۡسًا وَّ لَا زَمۡہَرِیۡرًا ﴿۱۳﴾﴿ "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** न उस में धूप देखेंगे न ठिठर।" येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنۡ شَآءَ اللہُ الۡکَرِیۡم बुख़ार की शिद्दत में नुमायां कमी महसूस होगी और मरीज़ सुकून महसूस करेगा।

﴾7﴿ इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : सूरतुल फ़ातिहा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये اِنۡ شَآءَ اللہُ الۡکَرِیۡم बुख़ार चला जाएगा।

﴾8﴿ **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुख़ार था तो ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था :

"بِسۡمِ اللہِ اَرۡقِیۡکَ مِنۡ کُلِّ شَیۡءٍ یُّؤۡذِیۡکَ مِنۡ شَرِّ کُلِّ نَفۡسٍ اَوۡعَیۡنٍ حَاسِدٍ اَللہُ یَشۡفِیۡکَ بِسۡمِ اللہِ اَرۡقِیۡکَ"

(**तरजमा : अल्लाह** पाक के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस चीज़ से जो आप को अज़िय्यत पहुंचाए हर नफ़्स की बुराई से या हर ह़सद वाली आंख से। **अल्लाह** पाक आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। मैं आप पर **अल्लाह** के नाम से दम करता हूं।) (مسلم، ص1202، حدیث:2186) बुख़ार के मरीज़ को अ़रबी में दुआ़ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये।

﴾9﴿ बुख़ार में मुब्तला शख़्स येह दुआ़ पढ़े : ''بِسْمِ اللهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ'' **तरजमा :** किब्रियाई वाले **अल्लाह** पाक के नाम से मैं हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की तपिश के शर से, अ़ज़मत वाले रब की पनाह चाहता हूं। (ترمذی، 4/20، حدیث:2082)

﴾10﴿ ह़दीसे पाक में है : जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (مستدرک للحاکم، 9/258، حدیث:7626)

﴾11﴿ ह़दीसे मुबारक में है : बुख़ार जहन्नम के जोश से है, इस को पानी के ज़रीए ठन्डा करो। (بخاری، 2/396، حدیث:3263)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है : अहले अ़रब को अक्सर ''सफ़रावी बुख़ार'' आते थे जिन में ग़ुस्ल मुफ़ीद होता है। हम लोगों को जो कि अ़जमी या'नी ग़ैर अ़रब हैं। त़बीबे ह़ाज़िक़ (या'नी माहिर त़बीब) के मश्वरे के बिग़ैर ग़ुस्ल के ज़रीए बुख़ार का इलाज नहीं करना चाहिये क्यूं कि हमें अक्सर वोह बुख़ार होते हैं जिन में ग़ुस्ल नुक़्सान देह है, इस से नुमूनिया का ख़त़रा होता है। ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स

ने ह़दीसे पाक का तरजमा पढ़ कर बुख़ार में ग़ुस्ल के ज़रीए़ इलाज किया तो उस को नुमूनिया हो गया और बड़ी मुश्किल से उस की जान बची तो वोह ह़दीसे पाक ही का मुन्किर हो गया, ह़ालां कि उस की अपनी जहालत थी। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/429, 430)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी सीखने को मिला कि अ़वाम को तरजमे के साथ साथ तफ़्सीरे क़ुरआन व शुरूह़े अह़ादीस भी पढ़नी चाहिएं। (अह़ादीसे मुबारका पढ़ कर किसी आ़शिक़े रसूल आ़लिमे दीन या मुफ़्तिये इस्लाम से समझे बिग़ैर इलाज न कीजिये।)

हड्डियों से इलाज के मदनी फूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हड्डियां भी **अल्लाह** पाक की ने'मत हैं और इन में ग़िज़ाइय्यत भी रखी गई है। जो लोग घर में पकाने के लिये बिग़ैर हड्डी का गोश्त ही ख़रीदते हैं वोह अपने साथ साथ अहले ख़ाना को भी **अल्लाह** पाक की एक ने'मत से मह़रूम करते हैं। यक़ीनन **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। हड्डियां ग़िज़ा के साथ साथ दवा का काम भी देती हैं। अतिब्बा बा'ज़ मरीज़ों को हड्डियों की यख़्नी पीने का मश्वरा देते हैं। आप ने भी बारहा हड्डियों की यख़्नी पी होगी। अलबत्ता ख़ालिस बोटी का सूप कभी नहीं पिया होगा ! हड्डियां बहुत अहम हैं, तिब्बी त़रीक़े पर हड्डियों से ह़ासिल शुदा अ़रक़ के इन्जेक्शन भी मरीज़ों को लगाए जाते हैं। जिस को हर चौथे दिन बुख़ार आता हो उसे गाय के सींग पीस कर खाने में मिला कर खिलाने से बि इज़्निल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से) शिफ़ा ह़ासिल हो जाती है।

(حیاۃ الحیوان الکبریٰ، 1/219)

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से
उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से
न पहुंचे उन के क़दमों तक न कुछ हुस्ने अ़मल ही है
हसन क्या पूछते हो हम गए गुज़रे ज़माने से

(ज़ौक़े ना'त, स. 214, 215)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत................1
बुख़ार किसे कहते हैं.....................2
सब से पहले बुख़ार किस को हुवा ?..2
बुख़ार होने की एक वज्ह.................3
गुनाहों की बीमारी.........................3
गुनाह से बढ़ कर कौन सी बीमारी है ?...............................4
हदीसे पाक पढ़ाने से शिफ़ा मिल जाती........................6
क्या कभी बीमार न होना अच्छी बात है ?..........................6
मुबारक अमराज़..........................7
40 दिन में बीमारी न आए तो ?........7
अल्लाह वालों की शान................8
बारगाहे रिसालत में बुख़ार की हाज़िरी.......................9
इन्तिक़ाल शरीफ़ से पहले बुख़ार की हाज़िरी................11
मरज़े मुबारक की कैफ़िय्यत...........12
7 मश्कों की हिक्मत..................13
सात का अ़दद...........................13
आ़शिक़े अक्बर की मरज़ शरीफ़ में मुशाबहत..............14
ता'वीज़ की बरकत.....................15
एक दिन बुख़ार छुपाने की फ़ज़ीलत...16
मौत के तीन क़ासिद....................16
बुख़ार के 11 रूहानी इलाज...........19
हड्डियों से इलाज के मदनी फूल........22

बुख़ार को बुरा न कहो

अल्लाह पाक के आखि़री नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया : तुम्हें क्या हो गया है जो कांप रही हो ? अ़र्ज़ की : बुख़ार आ गया है, **अल्लाह** इस में बरकत न करे। आप ने इर्शाद फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कहो कि येह तो आदमी की ख़त़ाओं को इस त़रह़ दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को।

(مسلم، ص1068، حدیث:6570)